वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 147 | शुक्रवार 20 सितम्बर 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

चित्तौड़गढ़ के अनगढ़ बावजी में वृक्षारोपण कार्यक्रम, मुख्यमंत्री के साथ 1008 जोड़ों ने किया वृक्षारोपण

हरियाला होगा राजस्थान, 50 करोड़ पेड़ लगाएंगे, बजट घोषणाओं की अविलम्ब क्रियान्विति कर रहे सुनिश्चितः मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

पर्यावरण संरक्षण-संवर्द्धन हमारी प्रमुख प्राथमिकता, मेवाड़ का शौर्य-पराक्रम देश-विदेश के लिए प्रेरणास्त्रोत

चित्तौड़गढ़/जयपुर. कासं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि वृक्ष हमारे जीवन का मूल हैं। एक व्यक्ति के पेड़ लगाने से आने वाली कई पीढ़ियों को वृक्षों द्वारा प्राणवायु मिलती है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए कृतसंकल्पित होकर कार्य कर रही है। हमने 'हरियालो राजस्थान' के अंतर्गत प्रदेशभर में 7 करोड़ से अधिक पेड़ लगाए हैं और एक दिन में दो करोड़ पेड़ लगाकर कीर्तिमान स्थापित किया है। पांच साल में 50 करोड़ से अधिक पौधे लगाने का हमने लक्ष्य भी निर्धारित किया है। शर्मा गुरूवार को चित्तौड़गढ़ के नरबदिया स्थित अनगढ़ बावजी परिसर में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रकृति की सेवा और मां के प्रति सम्मान के लिए शुरू किए गए अभियान के अंतर्गत आमजन एक पेड़ लगाने का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि मोदी सामाजिक सरोकारों के प्रेरणापुंज हैं। उनके द्वारा चलाए गए स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जन जागरूकता के प्रमुख वाहक बन गए हैं।

मेवाड़ है शक्ति और भक्ति की भूमि

मुख्यमंत्री ने चितौड़गढ़ के गौरवशाली इतिहास का स्मरण करते हुए यहां के शौर्य एवं पराक्रम को नमन किया। उन्होंने कहा कि मेवाड़ शक्ति और भक्ति की भूमि है। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप, भक्त शिरोमणि मीरा बाई, पन्नाधाय की स्वामीभक्ति और भामाशाह जैसे दानवीरों की यह भूमि हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

अमराभगत की धूणी में किए दर्शन

मुख्यमंत्री शर्मा ने अनगढ़ बावजी तपोस्थली पहुंचने पर संत शिरोमणि 1008 अमरा भगत की धूणी पर घी की आहूति दी एवं प्रदेश की सुख-समृद्धि की कामना की। उन्होंने सभास्थल पर ही मंत्रोच्चार के साथ पीपल का वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण में जनसहभागिता बढ़ाने का संदेश दिया। इस अवसर पर 1008 जोड़ों ने भी विधि विधान के साथ पूजा कर वृक्षारोपण किया।

हमारी सरकार दिन-रात जनता की सेवा में तत्पर: मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे मंत्रिगण प्रदेशभर का दौरा कर, सचिवालय में बैठक और जनसुनवाई कर दिन-रात जनता की सेवा कर रहे हैं। हमने संकल्प पत्र में किए वादों एवं परिवर्तित बजट 2024-25 की घोषणाओं को अविलम्ब धरातल पर उतारा है। हाल ही में 10 हजार करोड़ रूपए से ज्यादा की परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों का शुभारंभ, शिलान्यास एवं लोकार्पण हर क्षेत्र और हर वर्ग के विकास के प्रति हमारे दृढ़संकल्प को दर्शाते हैं।

सभी विधानसभा क्षेत्रों का हो रहा विकास: शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार प्रदेश की 200 विधानसभाओं की करीब 8 करोड़ जनता के विकास एवं कल्याण के लिए कृतसंकल्पित होकर कार्य कर रही है। प्रदेश की हर पंचायत एवं गांव में विकास कार्य स्वीकृत कर उनकी क्रियान्विति सुनिश्चित की जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने अधिकारियों को प्रत्येक विधानसभा की प्रोफाइलिंग करने के निर्देश दिए हैं, जिससे एक कार्ययोजना के अंतर्गत वर्षाजनित समस्याओं का समयबद्ध रूप से निस्तारण एवं विकास कार्यों की रूपरेखा सुनिश्चित की जा सकेगी।

2027 तक किसानों को मिलेगी दिन में भी बिजली

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में बिजली तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए राज्य सरकार ठोस कार्य योजना पर काम कर रही है और वर्ष 2027 तक किसानों को दिन के समय में भी बिजली उपलब्ध हो सकेगी। साथ ही, उद्योग एवं घरेलू उपभोक्ताओं को भी पर्याप्त बिजली मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि उद्योग, पर्यटन, कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए पानी की आवश्यकता होती है। इसको ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार ईआरसीपी, देवास परियोजना, इंदिरा गांधी नहर एवं यमुना जल समझौता जैसे अहम कदमों से राज्य में जलापूर्ति सुनिश्चित करने के लिए गतिशील है।

गोपालक लें 1 लाख रुपए तक ब्याजमुक्त ऋण सुविधा का लाभ

शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के माध्यम से गोपालकों के लिए एक लाख रुपये तक ब्याजमुक्त ऋण की सुविधा प्रदान की है। इसके तहत गोपालक गाय-भैंस खरीद सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार अनगढ़ बावजी परिसर में स्थित गौशाला को वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। साथ ही, उन्होंने भादसोड़ा उप तहसील को तहसील बनाने एवं अनगढ़ बावजी स्थित विद्यालय के क्रमोन्नयन करने की मांग पर सकारात्मक विचार करने का आश्वासन भी दिया। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने चित्तौड़गढ़ के लिए बजट में कई घोषणाएं की हैं, जिनकी त्वरित क्रियान्विति सुनिश्चित की जा रही है।

आचार्य श्री विद्यासागराय नम :

समाधिसम्राट, गणाग्रणी, जिनसूर्य, राष्ट्रहित चिंतक,

आचार्यश्रेष्ठ श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के परम प्रभावक, आज्ञानुवर्ती शिष्य

तीर्थचक्रवर्ती, श्रावक संस्कार शिविर के जनक, जगतपूज्य

निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज

के 42वां दीक्षा दिवस

समारोह के मुख्य अतिथि

माननीय श्री ओम जी बिरला
लोकसभा अध्यक्ष

के पावन अवसर पर
गुरुदेव के
श्री चरणों में

बारम्बार नमोस्तु

दीक्षा दिवस का आयोजन | शुभ तिथि- 20 सितम्बर 2024 दोपहर 1 बजे | स्थान- भाग्योदय तीर्थ, सागर (म.प्र.)

: नमनकर्ता :

• श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र मंदिर संघी जी सांगानेर जयपुर राजस्थान	• श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन सुदर्शनोदाय अतिशय तीर्थक्षेत्र आँवा जि. टोंक, राजस्थान	• श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन तीर्थोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र गोलाकोट खनियाधाना मध्य प्रदेश
• श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान एवं संत सुधासागर बालिका छात्रावास सांगानेर जयपुर	• श्री दिगम्बर जैन लोकोदय महातीर्थ, आगरा (उ.प्र.)	• श्री चॅवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन देशनोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र चैनपुरा, राजस्थान
• श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन तपोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र बिजोलिया जि. भीलवाड़ा राजस्थान	• तरुण -रजनी , अनुराग - प्रतीक्षा काला जैन ब्यावर निवासी मुंबई प्रवासी	• नंदकिशोर शांतादेवी, प्रमोद-नीना (ARL) सुनील - निशा, अंकित - ईती, अक्षत पहाड़िया जयपुर
• श्री आदिनाथ दिगंबर जैन शुभोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र, बीनागंज, जिला गुना (म.प्र.)	• शैलेंद्र प्रियंका गोधा (समाचार जगत) मोहित नम्रता राणा (पूर्णिमा हंडिक्राफ्ट), जयपुर	• विकाश जैन, कनिष्का जैन 7 Dot Interior, कोटा, राजस्थान
• सरला देवी, पन्नालाल बैनाड़ा, केतकी - विवेक बैनाड़ा आराध्य बैनाड़ा, देवांश बैनाड़ा	• विनय आभा जैन, विवेक मैत्रि जैन, आयुषी संभव जैन (अहमदाबाद) | योगेंद्र उर्मिल जैन (गाजियाबाद)	• जयंती परिवार, अलवर, राजस्थान • राकेश जी मडिया, (भाजपा जिला अध्यक्ष) कोटा
• राजकुमार - चंदा, यश जैन पहाड़िया, ब्यावर विनोद(मोनू) - रवीना छाबड़ा, जयपुर		

निवेदक
सकल दिगम्बर जैन समाज, सागर

विनीत
श्री विद्या सुधामृत वर्षायोग समिति, सागर

भारतीय वसुन्धरा पर दिगम्बर काया में विचरण करते हुए अपनी परोपकारी छवि और उन्नत प्रेरक कृतित्व से बंजर भूमि को उर्वर बनाते, जीर्ण-शीर्ण होते तीर्थों को उद्धारित कर पुनर्जीवन और नव्य स्वरूप प्रदान करते, दीन-दुःखीजनों पर करुणा बरसाते हुए उन्हें वस्त्र, भोजन और आवास प्रदान करने की प्रेरणा देकर सुखी बनाते, दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग दिलवाकर शरीर से सक्षम बनवाते, व्यसन मुक्त एवं शाकाहारी जीवन की प्रेरणा देकर राष्ट्रीय पशुधन बचाते, गौवंश के संरक्षण के लिए गौशालाएं खुलवाते, धार्मिक एवं लौकिक प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक की व्यवस्था के लिए स्कूल, कॉलेज और संस्थान खुलवाकर शिक्षित समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते, मानव को मानव के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए श्रावक संस्कार शिविरों के माध्यम से अभिनव शिक्षा- दीक्षा देने वाले हैं जगत्पूज्य, तीर्थचक्रवर्ती, महातपोमार्तण्ड, निर्यापक संत, मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज; जिन्हें परम जिनधर्म प्रभावक, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धारक, वास्तुविद्, सिद्धवाक्, मिथ्यात्वभंजक, नवतीर्थ प्रतिष्ठापक, अध्यात्मवेत्ता, जैनधर्म-दर्शन-साहित्य-संस्कृति संरक्षक, विद्वद्गुणानुरागी, इतिहास निर्माता, टेम्पल-डे विचार प्रवर्तक, चक्रवर्ती विवाह पद्धति सम्प्रेरक, श्रावक संस्कार शिविर प्रवर्तक, शिक्षानुरागी, आधुनिक विद्या केन्द्र संस्थापक, परम वात्सल्य के धनी आदि अनेक उपाधियों से अभिमंडित कर श्रमण-श्रावक समाज ने उनके प्रति जहाँ अपना बहुमान प्रकट किया है वहीं उनके कार्यों के प्रति कृतज्ञता भी व्यक्त की है। उनकी साधना श्रमण संस्कृति से समन्वित है, ऊर्ध्वगामी है, उत्कृष्टता से युक्त है। उनमें अपने गुरु परम पूज्य संतशिरोमणि समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं गुरु परम्परा के प्रति अगाध श्रद्धा है। यही विशेषता उनके गुणों को अप्रतिम बनाती है, स्मरणीय बनाती है। यही कारण है कि आज समस्त वैश्विक समाज उनके प्रति नतमस्तक है।

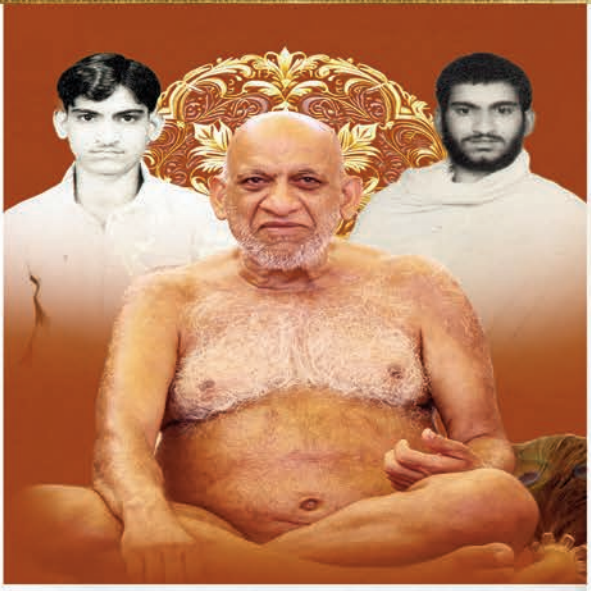

एक संत अरिहंत सा

४२वाँ दीक्षा दिवस

एक संत अरिहंत सा

जिनसाधना एवं मानव प्रतिष्ठा के क्षेत्र में चर्चित एक नाम
जगत् पूज्य, महातपो मार्तण्ड,

तीर्थचक्रवर्ती, श्रावक संस्कार शिविर के जनक, जगतपूज्य
निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज

जन्म,माता-पिता- मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज का जन्म जिला-सागर (म.प्र.) स्थित ग्राम-ईशुरवारा है, जहाँ आपने श्रावक श्रेष्ठी श्री रूपचन्द्र जैन की सहधर्मिणी श्रीमती शान्तिबाई जैन की कुक्षि से श्रावक शुक्ल सप्तमी (मोक्ष सप्तमी), संवत् 2015 तदनुसार दि. 21 अगस्त, 1958, दिन गुरुवार को जन्म लिया। आपका नाम श्री जयकुमार रखा गया। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ के निर्वाण दिवस के दिन आपका जन्म होने के कारण आपका नाम जयकुमार रखा गया। ताकि आप आत्मविजय के पथ पर चलें और अपने जय नाम को सार्थक करें।

गुरुवर के प्रथम दर्शन- आपने प्रथम बार संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शन सन् 1977 में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर (म.प्र.) में किये और दर्शन क्या किये, उन्हीं को निहारते हुए मन ही मन उन्हीं के पथ का अनुगामी बनने का संकल्प ले लिया। ब्रह्मचर्य व्रत एवं क्षुल्लक दीक्षा- आपने श्री विद्यासागर जी महाराज से श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र नैनागिर जी में दि. 19 अक्टूबर, 1978 को ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। दिनांक 10 जनवरी, 1980 को नैनागिरि में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से जयकुमार ने क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया क्षुल्लक श्री परमसागर। इस तरह एक नया जन्म हुआ। नया संकल्प कि आत्महित सर्वोपरि है।

ऐलक दीक्षा- आपने दि. 15 अप्रैल, 1982 को सागर (म.प्र.) में भगवान् महावीर जयन्ती के पावन दिन ऐलक दीक्षा संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से ग्रहण की। ऐलक अवस्था में आपने तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी की भावपूर्ण नौ वन्दना की और अपने सिद्धत्व को सुरक्षित किया।

दिगम्बर मुनि दीक्षा- आपने अश्विन कृष्ण तृतीया तदनुसार दि. 25 सितम्बर, 1983 को ईसरी (जिला- गिरिडीह, बिहार) में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से परम दिगम्बर जैनेश्वरी मुनिदीक्षा ग्रहण की और नाम पाया मुनि श्री 108 सुधासागर। उस समय आपकी अवस्था मात्र 25 वर्ष की थी। आचार्य श्री ने उन्हें प्रबोधित किया और कहा, सदा याद रखो- अहमिक्को खलु सुद्धो, दंसणणाणमइयो सदारूपी। ण वि अत्थि मज्झं अण्णं परमाणुमित्तंपि ।। अर्थात् मैं एक (एकाकी) हूँ, शुद्ध हूँ अर्थात् परद्रव्य के संबंध में सर्वथा रहित हूँ, दर्शन-ज्ञानमयी हूँ और सदा अरूपी हूँ, बाह्य पर द्रव्यों में मेरा परमाणु मात्र भी (ममत्व) नहीं है। मुनि बनने के बाद आपका प्रथम आहार श्रावक श्रेष्ठी श्री कल्याणमल जी झाँझरी (कलकत्ता) वालों के चौके में हुआ। आपने आहार में सभी रसों का त्याग कर मात्र लौकी की सब्जी और बिना नमक की रोटी ग्रहण की।

निर्यापक पद पर विभूषित- आचार्य श्री विद्यासागर जी ने आप में आचार्य के गुण और शिष्यों को शिक्षा दीक्षा देने की योग्यता देखी और निर्यापक पद पर विभूषित किया। दैनिक चर्या- आप प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से अपनी दैनिक चर्या प्रारंभ करते हैं जिसमें सामायिक, प्रतिक्रमण, शास्त्र स्वाध्याय, शांतिधारा वाचन, प्रवचन, शास्त्र पठन, गुरुभक्ति, प्रतिक्रमण आदि मुनियों के लिए उचित कार्य करना आपका नियम है और आवश्यक तो है ही, वे अपने आवश्यकों में कभी हानि नहीं करते। प्रशस्त कार्य- मुनिश्री की प्रेरणा से सांगानेर जयपुर में श्रमण संस्कृति संस्थान, बालिकाओं की शिक्षा के लिए संत सुधासागर संस्थान, कोटा, टोंक, ललितपुर आदि स्थानों पर संचालित विद्यासागर पब्लिक स्कूल एवं संत सुधासागर पब्लिक स्कूलों, महाविद्यालयों की स्थान-स्थान पर श्रृंखला, संघी जी मन्दिर, सांगानेर के यक्ष रक्षित रत्नमयी जिनबिम्बों का दर्शन कराना, देवोदय, पुण्योदय, जयोदय, जिनोदय, भव्योदय, चन्द्रोदय, सुदर्शनोदय, मंगलोदय, शुभोदय, सर्वतोभद्र, वीरोदय, गुणोदय, शीलोदय, पयोदय, धर्मोदय, शासनोदय, चमत्कारोदय, दर्शनोदय, देशनोदय, सतोदय, अभिनन्दनोदय, यशोदय, शान्तोदय, आदिनाथ धाम, पार्श्वनाथ धाम, जीवोदय आदि
प्राचीन-नवीन तीर्थों की संरचना युगों-युगों तक के लिए धर्म की पताका फहरा रही हैं। उनके विषय में ठीक ही कहा है-

हिंस भौतिकवाद में जो, कर रहे आतम उजागर। कर तपस्या आपकी लख, हृदय उमड़े अमित आदर।। लो स्वतः ही भर रही है, विनत मन की विनय गागर। है समर्पित पद चरण में, सुधामय हे सुधासागर।।

शांतिकारक, रोगशामक शांतिधारा-

मुनिश्री सुधासागर जी महाराज के मुख से उच्चरित शांतिधारा से जिनेन्द्र भगवान् का अभिषेक परम शांतिकारक, रोगशामक सिद्ध हो रहा है। आज पूरे विश्व में ऐसा कोई जैन मंदिर नहीं है जहाँ प्रतिदिन शांतिधारा नहीं होती हो। यह मुनिश्री का ही प्रेरक प्रताप है। जिज्ञासा समाधान- प्रतिदिन सायं 6 से 7 बजे तक मुनिश्री के समक्ष रखी गयी जिज्ञासाओं का समाधान मुनिश्री करते हैं जिनसे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र की नीति निर्धारित होती है। समग्र समाज प्रभावित होता है। विभिन्न टी.वी. चैनलों से इसका 122 देशों में सीधा प्रसारण होता है।

श्रावकसंस्कार शिविर- महान् दशलक्षण पर्व पर विगत 31 वर्षों से श्रावक संस्कार शिविर मुनिश्री के सान्निध्य में लगाये जा रहे हैं। इनमें आबालवृद्ध सम्मिलित होकर 10 दिन तक श्रावक (सद्गृहस्थ) और साधुवत् जीवन जीते हैं। संस्कारों का यह प्रभाव आजन्म देखने में आ रहा है। अब तक तीन लाख से अधिक लोग संस्कारित हो चुके हैं। संत विशेष- परम पूज्य निर्यापक मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज आज संत ही नहीं संत विशेष हैं। 45 वर्ष के संत जीवन में मुनिश्री ने स्वयं को तराशा है और जन-जन को भी तराशने के लिए सम्यक् उपदेश दिया है। विगत् 40 वर्षों से वे समाज के लिये योग्य कार्य की रूपरेखा तय कर रहे हैं। उनका कहा व्यर्थ नहीं जाता, उनके कहने से दिया (दान) व्यर्थ नहीं जाता। कहते हैं कि-

मुझको नहीं मानने वाले भी, कमाल का हुनर रखते हैं। मुझे देखना नहीं चाहते और, मुझ पर ही नजर रखते हैं।।

सर्वस्वीकार्य संत- वे आचार्यों, मुनियों के प्रिय हैं, विद्वानों के लिये श्रद्धास्पद हैं और समाज के लिये साक्षात् अरहन्त हैं जिनकी वाणी को दिव्य ध्वनि सा आदर और बहुमान प्राप्त है। आज वे अध्यात्म में आचार्य श्री कुन्दकुन्द के समान, आचार में आचार्य श्री वट्टकेर के समान, निर्भीकता और भक्ति में आचार्य श्री समन्तभद्र के समान समाज संरक्षण में आचार्य श्री जिनसेन के समान, तीर्थ संरक्षण में एवं तीर्थ निर्माण में आचार्य श्री नेमिचन्द्र के समान, व्यवहार में आचार्य श्री वीरसेन के समान और तीर्थंकर चरित-ज्ञान में आचार्य श्री यतिवृषभ के समान श्रद्धास्पद हैं। उनके गुण अपार हैं मेरी मति अल्प; मैं और संपूर्ण वैश्विक समाज उनके आशीर्वाद की चाह लिये उन्हें नमोस्तु करता हूँ। जन-गण-मन- के हैं पथ प्रहरी, जिन समाज के शरणाधाम । ऐसे गुरुवर सुधासिंधु को, मेरे बारम्बार प्रणाम।।

वर्तमान चातुर्मास- परम पूज्य मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज अपने संघस्थ क्षुल्लक गौरव श्री गंभीरसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री वरिष्ठसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री विदेहसागर जी महाराज एवं सात ब्रह्मचर्यव्रती जनों के साथ भाग्योदय तीर्थ, सागर (म.प्र.) में चातुर्मास हेतु विराजित हैं। जहाँ प्रतिदिन हजारों नर-नारी उनके दर्शन कर आशीर्वाद ग्रहण कर रहे हैं।

वेद ज्ञान

सेवा से मिलने वाले सुख की जगह कोई नहीं ले सकता

सेवा मानव-हृदय के भीतर उत्पन्न होने वाला वह मिशनरी भाव है, जिसका आविर्भाव, स्वहित की अपेक्षा लोकहित के उद्देश्य से निस्वार्थ रूप से हृदय-कमल में होता है। सेवा का उद्देश्य पाना नहीं, बल्कि प्राण-पण से अपना इष्टतम अपने आराध्य या अभीष्ट को समर्पित करना है। इसका पारितोषिक, भौतिक नहीं बल्कि अभौतिक और अनुभूतिपरक होता है। सेवा शाश्वत आनंद प्रदान करने वाली अनमोल और कभी न समाप्त होने वाली आंतरिक खुशी प्रदान करती है। सेवा से हृदय सर्वथा प्रफुल्लित और आनंदित रहता है। दूसरे अर्थों में सेवा से मिलने वाले सुख व आनंद की प्राप्ति का स्थान संसार का कोई भी भौतिक सुख या उपलब्धि नहीं ले सकती। नौकरी भी किन्हीं अर्थों में सेवा की ही अनुगामिनी या सहचर है, किंतु इससे मिलने वाला पारितोषिक भौतिक रूप में उपस्थित होकर क्षणिक सुख की सृष्टि रचता है और दूसरे ही क्षण इसकी प्राप्ति से अतृप्ति, असंतोष, निराशा, घृणा, पश्चाताप, चंचलता, अरुचि और अन्यान्य नकारात्मक भाव पैदा होने लग जाते हैं। नौकरी भौतिक उन्नति या प्राप्ति की प्रत्याशा से किया जाने वाला कार्य है, जिसमें समर्पण, अपनत्व, श्रद्धा व सेवा से कहीं अधिक स्वार्थपरायणता, भौतिक प्राप्ति की उत्कंठा या जिज्ञासा समाहित रहती है। नौकरी से मिलने वाले पारितोषिक से जीवन की खुशी का ग्राफ ऊपर-नीचे होकर मन को उसी अनुपात में सुख-दुख, खुशी-पश्चाताप का सुफल या कुफल देकर उद्वेलित-आंदोलित करता रहता है, लेकिन सेवा का पारितोषिक सदैव मन की जीर्ण-शीर्ण कुटिया को हरी-भरी कर सुख, आनंद व खुशी को बहुगुणित हर्षित-प्रफुल्लित रखता है। भौतिकता केंद्रित नौकरी संसार के भवसागर में गोते खाने के लिए बाध्य करती रहती है, जबकि स्वार्थरहित सेवा ईश्वर के साम्राज्य का राही बनाकर अलौकिक सुख और आनंद के लोक का मार्ग प्रशस्त करती है। सेवा ईश्वर का स्थाई सानिध्य पाने का आनंददायी मार्ग है। वहीं नौकरी स्वयं की प्रतिभा को भौतिक इच्छाओं को पूरा करने का साधन मात्र है।

संपादकीय

एक देश-एक चुनाव का बड़ा फैसला

पूरे विचार-विमर्श के बाद केंद्रीय कैबिनेट ने एक देश-एक चुनाव का फैसला कर लिया। यह फैसला बहुत महत्वपूर्ण है और बहुत चौंकाता है। देश जब आजाद हुआ था, तब एक साथ सारे चुनाव हुए थे, पर बाद में राज्यों में राजनीतिक उठापटक की वजह से मध्यावधि चुनाव होने लगे और एक साथ चुनाव का क्रम टूट गया। अब बुधवार को कैबिनेट ने फैसला किया है कि लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव पूरे देश में एक साथ होंगे। लोग यह भूले नहीं है कि यह एनडीए सरकार का एक प्रिय विषय रहा है और इसके लिए सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति गठित की थी। इस समिति ने विभिन्न पक्षों से पूरे विचार-विमर्श के बाद सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंप दी थी, जिसे अब केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भी मंजूरी दे दी है। अब पहली नजर में आकलन करें, तो एक देश एक चुनाव के लिए यहां से जमीनी कवायद शुरू हो गई है। मगर क्या यह काम आसान है ? क्या सभी दल और नेता इस फैसले को मान लेंगे ? जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सत्ता है, वहां तो इस फैसले का खूब विरोध होगा। क्या चुनाव आयोग विरोध का सही उत्तर दे पाएगा? ध्यान देने की बात है कि पूर्व राष्ट्रपति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट में एक साथ चुनाव कैसे कराया जाएगा, इसकी व्यापक रूपरेखा दी गई है। पहले लोकसभा और विधानसभाओं के लिए एक साथ चुनाव होंगे। उसके बाद 100 दिनों के अंदर हर जगह स्थानीय निकाय चुनाव कराए जाएंगे। ऐसा कब होगा, यह तो तय नहीं है, पर इस फैसले को लागू करने के लिए बड़े पैमाने पर परिवर्तन करने पड़ेंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि एक साथ चुनाव के लिए संविधान में कम से कम पांच या 18 छोटे-बड़े संशोधन करने पड़ेंगे। खैर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने ठान लिया है कि देश में चुनाव एक साथ ही कराए जाएंगे। वैसे तो एक देश-एक चुनाव का विषय पुराना है, मगर पहली बार कोई सरकार इस योजना के साथ इस मुकाम तक पहुंची है। प्रधानमंत्री ने एकाधिक बार इस बात को दोहराया है कि बार-बार चुनाव की वजह से देश के विकास में बाधा आती है। देश में लगभग हर चार-छह महीने पर कहीं न कहीं चुनाव होते रहते हैं। आचार संहिता लागू रहती है। अतः यह कहना सही है कि एक साथ चुनाव होने पर देश को हर स्तर पर लाभ होगा। राजनीतिक सुविधा भी बढ़ेगी, आर्थिक विकास की रफ्तार बनी रहेगी और देश में सामान्य कामकाज भी बेहतर हो सकेगा। ध्यान रहे, एक साथ चुनाव भाजपा का चुनावी वादा भी है, पर यह देखना होगा कि विपक्षी दल इस फैसले को कैसे स्वीकार करते हैं। वैसे, कुछ ही फैसले या संशोधन ऐसे हैं, जहां विधानसभाओं से मंजूरी की जरूरत पड़ेगी। चूंकि फैसला बड़ा है, अतः किसी पर थोपने के बजाय सहमत करने पर ज्यादा जोर होना चाहिए जो व्यावहारिक अड़चनें हैं, उन्हें दूर करना जरूरी है। शंकाओं का बाजार भी गर्म है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

जनगणना और राजनीति

देश में जनगणना लंबे समय से लंबित है। सरकार अब इसकी योजना बना रही है। विपक्षी दलों ने जाति के आधार पर जनगणना कराने की मांग उठाई है। धीरे-धीरे यह बड़ा मुद्दा बन गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी इसकी आवश्यकता जताई है। सरकार ने संकेत दिया है कि इस मुद्दे पर काम हो रहा है। वर्ष 2011 में जनगणना कराई गई थी। तब से अब तक उसी समय के आंकड़ों से ही काम चलाने की मजबूरी है। हालांकि, उन आंकड़ों को सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना के पलड़े में अप्रभावी, अधूरी और खराब प्रकृति का माना गया। जनगणना के आंकड़ें संवेदनशील माने जाते हैं और इनका व्यापक असर होता है। खाद्य सुरक्षा, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम और निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन जैसी कई योजनाएं इनपर निर्भर होती हैं। आंकड़ों का उपयोग सरकारों के साथ उद्योग जगत और शोध संस्थाएं भी करती हैं। बदलते समय के साथ देश के सामने नई चुनौतियां हैं, जिन्हें लेकर नीति निर्धारण की जरूरत है ऐसे में जरूरी है कि जनगणना को लेकर सरकार महापंजीयक और अन्य एजंसियों के लिए नए मानक दिशानिर्देश तैयार करे। जून 2024 तक 233 देशों में से भारत उन 44 देशों में से एक था जिन्होंने इस दशक में जनगणना नहीं की थी। सरकार का कहना है कि कोरोना महामारी के कारण यह कवायद नहीं की गई। हालांकि, 143 अन्य देशों ने इस काल में ही मार्च 2020 के बाद जनगणना की। संघर्ष, आर्थिक संकट एवं उथल-पुथल से प्रभावित यमन, सीरिया, अफगानिस्तान, म्यांमा, यूक्रेन, श्रीलंका और उप-सहारा अफ्रीका जैसे देशों ने जनगणना नहीं कराई। भारत में इस कवायद में देरी को लेकर सवाल उठे। यह तथ्य है कि वर्ष 1881 से 2011 तक बिना किसी बाधा के भारत में जनगणना कराई गई। सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना (एसईसीसी) पहली बार वर्ष 1931 में कराई गई थी। इसका उद्देश्य अभाव के संकेतकों की पहचान करने के लिए ग्रामीण और शहरी- दोनों क्षेत्रों में भारतीय परिवारों की आर्थिक स्थिति के बारे में सूचनाएं जमा करना था। एसईसीसी में संग्रहित जानकारी सरकार द्वारा परिवारों को लाभ देने या लाभ से वंचित करने में फैसले के लिए आधार बनती है। बहरहाल, जाति आधारित जनगणना के मुद्दे पर बहस जारी है। देश के कई हिस्सों में अभी भी जाति-आधारित भेदभाव है। ऐसे में विभिन्न जाति समूहों के वितरण को समझकर, सामाजिक असमानता को दूर करने और हाशिये पर रह रहे समुदायों के लिए लक्षित नीतियां बनाई जा सकती हैं। इसके विरोध में यह तर्क दिया जा रहा है कि जाति-आधारित भेदभाव बढ़ सकता है, जाति व्यवस्था के सबल होने की आशंका है। इसे रोकने के लिए जातिगत पहचान की जगह सभी नागरिकों के लिए व्यक्तिगत अधिकारों और समान अवसरों पर ध्यान केंद्रित करने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। भारत में जातियों को परिभाषित करना जटिल मुद्दा है, क्योंकि यहां हजारों जातियां और उपजातियां हैं। जरूरी यह है कि मुद्दों में न उलझते हुए नीति निर्धारण पर ध्यान दिया जाए। निश्चित समय सीमा तय की जाए। जनगणना एक लंबी और जटिल प्रक्रिया है। पहले ही काफी देर हो चुकी है। अब और देर उचित नहीं।

अंहिसा और शाकाहार का उपदेश देने वियतनाम रवाना हुआ जैन सोशल ग्रुप का दल

मनीष पाटनी. शाबाश इंडिया

अजमेर। आज जैन सोशल ग्रुप का 40 सदस्य दल अंहिसा और शाकाहार का उपदेश देनें के लिए वियतनाम के लिए रवाना हुआ। यात्रा के संयोजक संजय सोनी ने बताया कि जैन सोशल ग्रुप समय समय पर इस तरह के आयोजन करता रहता है। वियतनाम के लिये आठ दिवसीय यह ग्रुप आज वन्दे भारत से रवाना हुआ। ग्रुप के अध्यक्ष सुनिल दौसी ने बताया कि इस यात्रा का उद्देश्य वियतनाम जैसे देश मै अंहिसा और शाकाहार का प्रचार और प्रसार करना है। यात्रा की तैयारियां पुर्ण कर ली गयी है। ग्रुप पूर्व में भी गोमटेश बाहुबली ,लाडनू , पावापुरी, जीरावाला, महावीरजी, पदमपुरा की यात्रा कर चुका है। इस यात्रा मे वित्तीय जिम्मेदारी विनय गदिया, राकेश अजमेरा को सौपी गई है। गेम्स इन्दू जी खिलाऐगी। आज सुबह जैन सोशल ग्रुप के सचिव अमित वैद एवं सदस्य अंकुर जैन, प्रमोद सोगानी, नरेश गंगवाल, ज्योति जैन, रागिनी जैन, ने सभी का रेलवे स्टेशन पहुंच कर स्वागत किया।

भारत विकास परिषद की राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता संपन्न

उदयपुर. शाबाश इंडिया

भारत विकास परिषद 'उदय' उदयपुर के मीडिया प्रभारी सुनील गांग ने बताया की शाखा के और से राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता जवाहर जैन शिक्षण संस्थान हिरण मगरी सेक्टर 11 में आयोजित की गई। मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। वंदे

मातरम के गान से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। शाखा अध्यक्ष सन्तोष कुमार जैन ने अपने स्वागत उद्बोधन में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए उनका परिचय प्रस्तुत किया। डॉ मेघेंद्र शर्मा ने समूहगान प्रतियोगिता के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रतियोगिता के प्रथम चरण में प्रतिभागियों ने हिंदी में व द्वितीय चरण में संस्कृत में देशभक्ति गीतों की तथा तृतीय चरण में लोकगीतों की ओजस्वी स्वरों में प्रस्तुतियां दी। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अरुणा गुप्ता तथा भारत विकास परिषद की नेशनल वाइस चेयरपर्सन डॉ सन्तोष गोधा ने अपना उद्बोधन दिया। इस प्रतियोगिता में शाखा स्तर पर प्रथम स्थान सेंट्रल एकेडमी हिरण मगरी सेक्टर 3 की टीम ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल उदयपुर की टीम रही। तृतीय स्थान पर सेंट्रल एकेडमी हिरण मगरी सेक्टर 5 की टीम रही। तीनों टीमों को सर्टिफिकेट तथा पुरस्कार प्रदान किए गए। शेष टीमों को सर्टिफिकेट्स प्रदान किए गए। प्रतियोगिता के निर्णायक नारायण गंधर्व, माधुरी पालीवाल तथा मुक्ता शर्मा थे। कार्यक्रम का संचालन प्रतियोगिता संयोजिका मंजु जैन ने किया। धन्यवाद तथा आभार डॉ भूपेंद्र व्यास ने ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डॉ बी एल हीरावत, बी एल खमेसरा, अनिल गोधा, डॉ महीप भटनागर, डॉ डी के गुप्ता, डॉ प्रभा गुप्ता, अनिल चपलोत, प्रेमलता चपलोत, कुसुम बोर्दिया, अभय मेहता, शरद मंत्री, पी सी कोठारी, राजेंद्र कंठालिया, पूरणमल जैन आदि सदस्यों की उपस्थिति रही। विजेता टीम 29 सितंबर 2024 को कपासन (चित्तौड़गढ़) में आयोजित होने वाली प्रांत स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेगी।

राजस्थान विश्वविद्यालय महिला संस्था (रूवा), जयपुर का स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान विश्व विद्यालय महिला संस्था (रूवा), जयपुर के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर अध्यक्ष डॉ. शशिलता पुरी के दिशा निर्देशन में आर्च, कॉलेज ऑफ डिजाइन में लेक्चर सीरीज के अंतर्गत लैंगिक संवेदनशीलता पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के शुरूआत में डॉ. मेघा ने स्वागत संबोधन किया। रूवा एकेडेमिक सेल की संयोजिका प्रो. संगीता शर्मा ने समाज के विभिन्न वर्गों में व्याप्त लैंगिक भेदभाव के बारे में बताया। आर्च कॉलेज की निदेशक डॉ. अर्चना सुराणा ने कॉलेज में लैंगिक मुद्दों पर चल रहे कार्यक्रमों के बारे में बताया। डॉ. शशिलता पुरी ने उपस्थित छात्रों व सदस्यों को रूवा व इसके द्वारा संचालित विभिन्न प्रकोष्ठों के बारे में जानकारी दी। रूवा की उपाध्यक्ष प्रो. बीना अग्रवाल ने लिंग संबंधी रूढ़िवादिता तथा महिलाओं के प्रति होने वाले साइबर क्राइम के प्रति विद्यार्थियों को सजग किया। कार्यक्रम कें अंत में रूवा द्वारा संचालित महिला सुरक्षा एवं सलाह केन्द्र के पेम्पलेट वितरित किये गये।

एक पेड़ मां के नाम, विशाल वृक्षारोपण कार्यक्रम एवं सम्मान समारोह का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

खातीपुरा व्यापार मंडल के अध्यक्ष भवानी सिंह राठौड़ ने बताया की राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल शहीद दिग्विजय सिंह सुमाल खातीपुरा में विशाल वृक्षारोपण किया गया एवं शिक्षक अभिभावक संघ के संरक्षक भवानी सिंह राठौड़ और शंकर सिंह का सम्मान श्री राजपूत महासभा देहात के अध्यक्ष मोती सिंह सांवली हिम्मत सिंह कुसुंबी भामाशाह सम्मान को देकर साफा मोमेंटो का सर्टिफिकेट देकर सम्मान किया गया इसमें अध्यापक अभिभावक संघ के संरक्षक भवानी सिंह राठौड़ अध्यक्ष खातीपुरा व्यापार मंडल जयपुर, अध्यक्ष शंकर सिंह विद्यालय प्रधानाचार्य जे पी राघव सहित समस्त स्टाफ व बालक बालिकाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया और सब ने शपथ ली कि वृक्षों की देखभाल पानी और खाद बीज से वृक्षों को जिंदा रखने संकल्प किया जल है तो जीवन है और वृक्ष वृक्ष है तो ऑक्सीजन है।

लाडनूं में दसलक्षण पर्व पर हुए भव्य आयोजन

लाडनूं. शाबाश इंडिया

संयम तप व साधना का महापर्व पर्युषण लाडनूं दिगंबर जैन समाज में श्रद्धा भक्ति पूर्वक मनाया गया। लाडनूं की दिगंबर जैन समाज के सदस्य राज पाटनी ने बताया कि इस अवसर पर यहां के विभिन्न मंदिरों में अनेक धार्मिक व सांस्कृतिक अनुष्ठान आयोजित किए गए। ग्यारह दिन चले इस आयोजन के दौरान नियमित रूप से प्रतिदिन होने वाले जिनेंद्र भगवान के अभिषेक, शांतिधारा, पूजन के साथ ही दसलक्षण पर्व से संबंधित विशेष पूजन, विधान, व प्रवचन आयोजित किए गए। आचार्य सुनील सागर जी संघस्थ विदुषी शिष्या ब्रह्मचारिणीद्वय पूर्णिमा दीदी, सुमन दीदी के सान्निध्य में विशेष प्रवचन व अन्य अनुष्ठानों में बड़ी संख्या में श्रावकों ने सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्राप्त किया। प्रतिदिन सायंकाल में आरती व प्रवचन के पश्चात प्रश्नमंच, भजन संध्या, कहानी वाचन, संगीतमय हाउजी, भक्तामर पर आधारित विचित्र वेशभूषा, कौन बनेगा धर्मशिरोमणी, संगीतमय अंताक्षरी, नृत्य व लघु नाटिका का मंचन, तथा आचार्य सुनील सागर जी महाराज के जीवन तथा स्वर्ग नर्क पर आधारित फिल्मों का प्रसारण सहित अनेक मनभावन धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। दस उपवास संपन्न करने वाले श्रावक संतोष गंगवाल व अन्य लघु व्रतधारियों का समाज के विभिन्न मंचों पर सम्मान किया गया।

बड़ा है सुहाना मौसम खुशी की बहार है, मोक्ष कल्याणक है आज, वासुपूज्य जिनका नाम है मंदार जिनका धाम है... भजनों से गूंज उठा मंदारगिरी

निर्वाण महोत्सवः भगवान वासुपूज्य मोक्ष कल्याणक पर निर्वाण स्थली मंदारगिरी में निकाली गई भव्य रथयात्रा, जैन श्रद्धालुओं ने चढ़ाया भव्य निर्वाण लाडू

पवित्र पर्वः उत्तम ब्रह्मचर्य के साथ जैनियों के महापर्व दशलक्षण सानन्द संपन्न हुआ...

भक्तिः दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार-झारखण्ड, उत्तर प्रदेश आदि प्रांतो से भारी संख्या में पहुँचे जैन धर्मावलंबी

आस्थाः भगवान वासुपूज्य की निर्वाण स्थली मंदारगिरी को स्मरण कर पूरे देश-विदेश में जैन श्रद्धालु चढ़ाते है निर्वाण लाडू

बौंसी (बांका): जैन धर्म के 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी के निर्वाण महामहोत्सव पर उनके निर्वाण स्थली मंदारगिरी में मंगलवार को जैन धर्मावलम्बियों ने धूमधाम के साथ भव्य शोभायात्रा निकालकर भव्य निर्वाण लाडू श्रद्धापूर्वक चढ़ाया। रथयात्रा का प्रारम्भ श्री दिगम्बर जैन कार्यालय मंदिर से प्रारंभ होकर हनुमान चौक, बौंसी बाजार, गांधी चौक वापस वासुपूज्य द्वार, पंडा टोला, समोशरण बारामती जैन मंदिर, पापहरणी रोड के रास्ते गाजे-बाजे के साथ मंदार पर्वत तलहटी स्थित जैन मंदिर तक गई। रथयात्रा के पहले बौंसी स्थित कार्यालय जैन मंदिर में प्रातः 6 बजे अभिषेक, शांतिधारा व पूजन-अर्चना किया गया।

सुसज्जित रथ पर वासुपूज्य स्वामी को विराजमान कर निकाली गई रथयात्रा

बड़ा है सुहाना मौसम खुशी की बहार है, मोक्ष कल्याणक है आज, वासुपूज्य जिनका नाम है मंदार जिनका धाम है... भजनों पर श्रद्धालु झूम उठे। भगवान वासुपूज्य स्वामी के प्रतिमा जी को सजे-धजे भव्य रथ पर प्रातः करीब 6 बजे विराजमान कर गाजे-बाजे के साथ भव्य रथयात्रा मंदार पर्वत के लिए धूमधाम के साथ प्रस्थान हुई। रंग-विरंगे फूल-मालाओं और पंचरंगा जैन ध्वज से भव्य तरीके से सजाया गया था। जो बहुत ही आकर्षक लग रहा था और लोगो को आकर्षित कर रहा था। रथ पर विराजमान भगवान वासुपूज्य की मनोहारी प्रतिमा चांदी के छत्र तले अलौकिक छटां बिखेर रही थी। जैन श्रद्धालु हर्षोल्लासपूर्वक झूमतेझनाचते, भक्ति-भजन करते महामंत्र णमोकार का जाप करते हुए चल रहे थे। इस दौरान जगहझजगह रथ पर विराजमान भगवान वासुपूज्य की मंगल आरती की गई।

''जियो और जीने दो'' के संदेश का हुआ जयघोष, दिया सत्य, अहिंसा, मैत्री और शांति का संदेश

शोभायात्रा के आगे-आगे जैन पंचरंगा ध्वज, झंडा-पताका लिए श्रद्धालु जैन संदेश देते चल रहे थे। गाजे-बाजे, घंटी के मधुर धुन पर श्रद्धालु नृत्य करते रथयात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। इस महोत्सव को लेकर जैन समाज के बीच खासा उत्साह था। ज्ञात हो कि मंदारगिरी जैन धर्म के 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी का तप, कैवल्य ज्ञान व पावन मोक्ष स्थली है। इस भव्य शोभायात्रा व निर्वाण महोत्सव में देश के कोने-कोने से सैंकड़ो की संख्या में जैन श्रद्धालु मंदारगिरी पहुंचे। मालूम हो कि भगवान वासुपूज्य की निर्वाण स्थली मंदारगिरी को स्मरण कर पूरे देश-विदेश में जैन श्रद्धालु निर्वाण लाडू चढ़ाते है।

मंदार पर्वत शिखर स्थित मोक्ष कल्याणक स्थली पर चढ़ाया गया भव्य निर्वाण लाडू

क्षेत्र प्रबंधक पवन कुमार जैन ने बताया कि भगवान वासुपूज्य के तप, ज्ञान एवं पावन निर्वाण भूमि से सुशोभित मंदारगिरी पर्वत शिखर स्थित मोक्ष कल्याणक मंदिर में प्रभु के अत्यंत प्राचीन चरण पादुका के समक्ष एवं भगवान वासुपूज्य खड्गासन मंदिर में भव्य निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। निर्वाण लाडू आकर्षक ढंग से शुद्धिपूर्वक तैयार किया गया था। इससे पूर्व मंत्रोच्चारण, भगवान वासुपूज्य का अभिषेक, महामस्तकाभिषेक, शांतिधारा, पूजन-पाठ, निर्वाण काण्ड पाठ आदि का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस आयोजन को सफल बनाने में मंदारगिरी दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र प्रबंधन तैयारी में लगी हुई थी। विदित हो कि जैनियो के चल रहे दस दिवसीय महापर्व पर्युषण यानी दशलक्षण का समापन गुरुवार को उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म के साथ हुआ। इस दौरान जैन धर्म के कई अनुष्ठानों से मंदारगिरी क्षेत्र का वातावरण पवित्र हुआ और जैन धर्मावलंबियो ने विश्वशांति के लिए प्रतिदिन मंगल भावना सहित विशेष पूजन कर रहे थे।

उत्तम ब्रह्मचर्य के साथ महापर्व दशलक्षण धर्म पूजा सम्पन्न

संजीव जैन ने बताया कि जैन धर्म के अनुसार नौ दिनों की यात्रा के बाद यह उत्तम ब्रह्मचर्य अंतिम गंतव्य है। हमारे पहले नौ दिन एक सीढ़ी की तरह हैं जिन्हें हमें मुक्ति पाने के लिए पार करना होगा। उत्तम ब्रह्मचर्य हमें सिखाता है कि परिग्रहों का त्याग करना जो हमारे भौतिक संपर्क से जुड़ी हुई है। अर्थात सादगी से जीवन व्यतित करना सिखाता है। कहा गया है कि उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन करने से मनुष्य को पुरे ब्रह्माण्ड का ज्ञान और शक्ति प्राप्त हो सकती है। इस अवसर पर क्षेत्र प्रबंधक पवन कुमार जैन के नेतृत्व में स्थानीय संजीव जैन, श्रीकांत जैन, शुभम जैन, सोमेश जैन, शिल्पी जैन, आयुष जैन, मिंकू जैन सहित देश के दिल्ली, चेन्नई, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, गुजरात, बिहार-झारखण्ड से सैंकड़ो की संख्या में जैन धर्मावलम्बी शामिल हुए।

प्रेषक-प्रवीण जैन (पटना)

महिला जागृति संघ द्वारा कौन बनेगा धर्मपति का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर की सबसे पुरानी महिलाओ की संस्था महिला जागृति संघ द्वारा अमित बाकलीवाल के सहयोग से ''कौन बनेगा धर्मपति'' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती कांता रावंका थी। इसी कड़ी में 1 शशी जैन द्वारा लिखित नाटक ''ज्ञान बड़ा या धन'' का भी मंचन किया गया जिसमें मुख्य भूमिका निर्मला वैद, सरोज जैन, दीपिका गोघा, निर्मला गंगवाल, रूबी जैन, ज्योति छाबड़ा, गरिमा बाकलीवाल, मानसी,काशवी, प्रार्थना , शारदा सोनी,साधना काला, एवं सरोज छाबड़ा, शशी जैन, साधना काला ने संगीत में स्वर दिया। महिला जागृति संघ की अध्यक्ष श्रीमती शशी जैन ने बताया कि संस्था द्वारा दस लक्षण पर्व में सभी कार्यक्रम बहुत अच्छे हुए। मंत्री सरोज जैन ने कहा की सभी कार्यक्रमो में सदस्यों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

अनुमोदना हार्दिक बधाई एवं साधुवाद

जयपुर. शाबाश इंडिया

शक्तिनगर निवासी प्रसिद्ध समाज सेवी एवं परम मुनि भक्त आलोक अजमेरा पुलक जन चेतना मंच की महामंत्री एवं प्रसिद्ध समाजसेविका श्रीमति सुनिता ज अजमेरा को षोडशकारण समापन कलश एवं पड़वा ढोक की श्री चन्द्रप्रभू दिगम्बर जैन मंदिर पल्लीवाल में राशि रुपए 1,51,000/- में श्री जी की माल का पुण्यार्जन करने पर सभी समाज जनो ने अनुमोदना की।

तेरी क्या औकात

नई सदी में आ रहा, ये कैसा बदलाव ।
संगी-साथी दे रहे, दिल को गहरे घाव ।।

हम खतरे में जी रहे, बैठी सिर पर मौत ।
बेवजह ही हम बने, इक-दूजे की सौत ।।

जर्जर कश्ती हो गई, अंधे खेवनहार ।
खतरे में 'सौरभ' दिखे, जाना सागर पार ।।

थोड़ा-सा जो कद बढ़ा, भूल गए वो जात ।
झुग्गी कहती महल से, तेरी क्या औकात ।।

मन बातों को तरसता, समझे घर में कौन ।
दामन थामे फोन का, बैठे हैं सब मौन ।।

हत्या-चोरी लूट से, काँपे रोज समाज ।
रक्त रंगे अखबार हम, देख रहे हैं आज ।।

कहाँ बचे भगवान से, पंचायत के पंच ।
झूठा निर्णय दे रहे, 'सौरभ' अब सरपंच ।।

योगी भोगी हो गए, संत चले बाजार ।
अबलाएं मठ लोक से, रह-रह करे पुकार ।।

दफ्तर,थाने, कोर्ट सब, देते उनका साथ ।
नियम-कायदे भूलकर, गर्म करे जो हाथ ।।

मंच हुए साहित्य के, गठजोड़ी सरकार ।
सभी बाँटकर ले रहे, पुरस्कार हर बार ।।

-डॉ सत्यवान सौरभ

अनुमोदना

साधर्मी बहन भाइयों ने व्रत उपवास कर 10 लक्षण और रत्नत्रय का पहना चोला,
अंतरंग और बहिरंग से शुद्ध होता आत्म तत्व का कोना,
परिग्रह, रस परि त्याग और कषाय भाव भी होता मंद,
तभी तो हर मानव पर्यूषण पर्व का लेता है पूर्ण आनंद,
ना जाने कहां से आ जाती है हम सब में इतनी शक्ति,
10 लक्षण पर्व के त्यौहार को मनाने के लिए,
त्याग तपस्या में डूबकर करते हैं भगवान की भक्ति,
स्वयं की आत्मा को निखारने के लिए होता है यह 10 लक्षण,
क्षमा करते हुए क्रोध मान माया लोभ को दूर करने का होता आवरण,
रत्नत्रय सिखाता हमें दर्शन ज्ञान चारित्र का पाठ,
जैन धर्म का तीन मूल सार,
देव दर्शन पियो छान के पानी रात्रि भोजन का करो त्याग,
तभी तो तुम्हारे 10 लक्षण और रत्नत्रय का होगा प्रचार,
कह लाओगे तुम जैनी,, लहराएगा पताका बार-बार,
करते हैं हम आपके त्याग तपस्या की अनुमोदना,
सुख साता से रहे आप और पूर्ण हो आपकी सारी मनोकामना,

सभी को जय जिनेंद्र
ज्योति छाबड़ा
सी स्कीम जयपुर

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

उपवास स्वयं की साधना का सबसे बड़ा मार्गः आचार्य शशांक सागर जी

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर जयपुर में विराजमान परम पूज्य आचार्य गुरुवर शशांक सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में चल रहे दशलक्षण महापर्व महोत्सव के समापन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित जन समुदाय को मंगल आशीर्वाद देते हुए कहा की उपवास स्वयं की साधना का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है मनुष्य अपने जीवन को उपवास के माध्यम से वीर प्रभु की साधना करके भाग्योदय के पथ पर चल सकता है क्योंकि उपवास में की गई साधना सर्वश्रेष्ठ होती है और अपने जीवन को सार्थक करने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग भी यही है बंधुओ भादवे के महीने में की गई साधना से आपके जीवन का मार्ग प्रशस्त होता है जीवन को एक नई दिशा मिलती है आपके जीवन में जो भटकाव चल रहा है उसे पर विराम लग जाता है क्योंकि आपने अपने आप को साधना के मार्ग पर चलने के लिए तैयार कर लिया है और यही स्वयं के लिए सर्वश्रेष्ठ पाने का सबसे बेहतर रास्ता है। प्रचार संयोजक विनेश सोगानी ने बताया कि सोलह कारन जी के 32 उपवास करने वाले श्री गिरीश जी जैन का श्री दिगंबर जैन समाज समिति द्वारा विशेष सम्मान किया गया एवं उनके द्वारा की गई त्याग के इस साधना की अनुमोदना की भावना भाई गई इस अवसर पर राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद्र जैन महामंत्री मनीष बेद मंत्री विनोद जैन कोटखावदा राजस्थान जैन युवा महासभा के अध्यक्ष प्रदीप जैन समाज समिति वरुण पथ के कोषाध्यक्ष कैलाश सेठी उपाध्यक्ष राजेंद्र सोनी कार्यक्रम संयोजक विनेश सोगानी संतोष कासलीवाल सतीश कासलीवाल ने सभी का स्वागत किया श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर में प्रतिदिन आयोजित किए जाने वाले भगवान महावीर विधान एवं हवन के पुण्यार्जक अशोक शीला पापड़ीवाल ने भगवान महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित करने एवं परम पूज्य आचार्य गुरुवर के पाद पक्षालन एवं शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

पिंक क्लब वेलफेयर सोसायटी द्वारा 300 खाने के पैकेट वितरित किए

जयपुर. शाबाश इंडिया

पिंक क्लब वेलफेयर सोसायटी ने जेकलोन अस्पताल के बाहर 300 खाने के पैकेट , फल , तरह तरह के नमकीन , मीठा व लस्सी वितरित की। अध्यक्ष सुषमा के के ने बताया हम कुछ सखियाँ महीने में 2-3 बार इस तरह के प्रोग्राम करते हैं। इस बार जेकलोन अस्पताल के बाहर किया क्योंकि हमने देखा कि लोग बाहर से आते हैं और अपने परिजनों के इंतजार में परेशान होते रहते हैं ऐसे में भूख प्यास स्वाभाविक है इसमें लता, रश्मि, आभा, यशोधरा व शशि का भी सहयोग रहा।

जिनवाणी के श्रवण से मनुष्य का मन पवित्र होता है और आत्मा शुद्ध होती है वीवीसीः साध्वी मधुसुधा

उदयपुर. शाबाश इंडिया

पंचायती नौहरा मुखर्जी चौक में आयोजित धर्मसभा में गुरुवार को साध्वी मधुसुधा ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिनवाणी के श्रवण से मनुष्य का मन पवित्र होता है और आत्मा शुद्ध होती है। जिनवाणी का प्रभाव जीवन की शैली को सकारात्मक रूप से बदल देता है, जिससे मनुष्य अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पहचानने की दिशा में अग्रसर होता है। साध्वी ने कहा कि जिनवाणी मनुष्य के भीतर गहरे उतरकर उसे धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है, जिससे वह शाश्वत सुख की प्राप्ति कर सकता है। बिना परमात्मा की वाणी को आत्मसात किए कोई भी प्राणी आत्म-उत्थान की दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता। जिनवाणी से व्यक्ति अपने अशुभ कर्मों के बंधनों से

मुक्त हो सकता है और आत्मा की शुद्धि की ओर कदम बढ़ा सकता है। साध्वी संयम सुधा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जिनवाणी सुनना आत्म कल्याण का सर्वोत्तम साधन है, और इसके श्रवण से मनुष्य सही मार्ग पर चलकर आत्म कल्याण प्राप्त कर सकता है। इस अवसर पर श्री संघ के अध्यक्ष सुरेश नागौरी, महामंत्री रोशनलाल जैन, राजेंद्र खोखावत, दिनेश हिंगड़, रमेश खोखावत, महिला मंडल की अध्यक्ष मंजू सिरोया, संतोष जैन, पुष्पा खोखावत सहित सभी पदाधिकारी एवं श्रद्धालुउपस्थित रहे। प्रवक्ता निलिष्का जैन बताया धर्मसभा में प्रखर वक्ता डॉ.प्रिती सुधाजी के 17 उपवास की अनुमोदना करते हुए सभी ने उनके मंगलमय जीवन और उनकी तपस्या की निरंतर प्रगति के लिए शुभकामनाएं व्यक्त कीं। साध्वी प्रिती सुधा जी बड़ी तपस्या की ओर अग्रसर हैं।

महावीर नगर में त्यागी वृतियों का हुआ सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया। भादो मास के अनंत चतुर्दशी के बाद महावीर नगर प्रबंध समिति,महिला मंडल,युवा मंडल ने आज प्रातः जैन भवन में दस दिन के उपवास करने वाली श्रीमति प्रिंयका गोधा,तीन उपवास (तेला) करने वाले श्रीमती विनीता जैन,शालिनी सोगानी, नितिन पाटनी,दीपाली पाटनी, लीना जैन (तिजारावाला परिवार) हिमांशू छाबड़ा का शाल, तिलक,माला पहनाकर स्वागत किया।मंदिर जी के अध्यक्ष अनिल जैन, मंत्री सुनील बज, उपाध्यक्ष दर्शन जैन, संयुक्त मंत्री पवन जैन तिजारा वाले, कोषाध्यक्ष गिरीश बाकलीवाल, कमेंटी की ओर से महिला मंडल की अध्यक्ष सुशीला गोदिका, युवा मंडल के अध्यक्ष प्रशांत पांड्या ने सभी का शॉल माला पहनाकर सम्मान किया स्वागत सम्मान समारोह में समाज के सभी गणमान्यजन लोग उपस्थित थे।

सामुहिक कलशाभिषेक के साथ क्षमावाणी पर्व मनाया

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान मे जैन मुनि अनुसरण सागर महाराज एवं आर्यिका विशेष मति माताजी के सानिध्य में दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर एवं बिचला जैन मंदिर पर सामूहिक क्षमावाणी पर्व मनाया गया जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी।जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला एवं राकेश संधी ने बताया कि पर्युषण दशलक्षण महापर्व के समापन अवसर पर दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर एवं बिचला जैन मंदिर में विधिवत विधि विधान एवं मंत्रोच्चार द्वारा भगवान पार्श्वनाथ जी एवं भगवान शांतिनाथ जी का गाजे बाजे के साथ सामुहिक कलशाभिषेक किया इसके बाद श्रद्धालुओं ने भगवान की अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना कर वर्ष भर में हुई गलतियों के लिए माफी मांगने का दौर चला जो देर रात तक चलता रहा। समाजसेवी हितेश छाबड़ा ने बताया कि श्रद्धालुओं ने बिचला जैन मंदिर पर सामूहिक कलशाभिषेक के बाद गाजे बाजे से भजन कीर्तन किए गए इस दौरान श्रद्धालुओं ने बिचला जैन मंदिर से ही क्षमावाणी पर्व पर एक दूसरे से गले मिलकर एक दूसरे से वर्ष भर में हुई गलतियों के लिए माफी मांगी। सामुहिक कलशाभिषेक में भगवान की माला पहनने का सौभाग्य नेमीचंद चेतन कुमार गंगवाल एवं गोपाल लाल शंभु कुमार कठमाणा एवं राजकुमार रितिक कुमार संधी को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर विधायक रामसहाय वर्मा पालिकाध्यक्ष दिलीप ईसरानी जैन समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा महेन्द्र चंवरिया हेमचंद संधी महावीर प्रसाद छाबड़ा शिखरचंद काला महेश गिन्दोडी राजकुमार संधी अशोक कटारिया पदम जौंला त्रिलोक सिरस हितेश छाबड़ा नेमीचंद सिरस अतुल ठोलिया सहित अनेक लोग मौजूद थे।

दशलक्षण पर्व व वासुपूज्य भगवान का मोक्षकल्याणक धुलियान पश्चिम बंगाल में सानन्द संपन्न

धुलियान पश्चिम बंगाल. शाबाश इंडिया

ब्रम्हचारी बीरेन्द्र भैयाजी(हीरापुर, सागर) के सानिध्य में धुलियान में धर्म प्रभावना के साथ दशलक्षण पर्व सम्पन्न हुआ उन्होंने हमें दशलक्षण पर्व के दश दिनमें दश धर्म का सार समझाया, रोजाना भगवान के अभिषेक शांति धारा पुजा-अर्चना के मध्य भैयाजी जी का मंगल प्रवचन होता था उसके वाद दोपहर में तत्वार्थसुत्र का पाठ होता था तथा प्रतिक्रमण भी कराया जाता था, अनन्त चतुर्दशी के दोपहर को भगवान को रथ में विराजमान कर भव्य जुलुस निकाला गया तदपश्चात मंदिरजी में वासुपूज्य भगवान का मोक्षकल्याणक निर्वाण लड्डु भैयाजी के सानिध्य में हर्षोल्लास के साथ चंढ़ाया गया तथा भक्तामर रिद्धिमन्त्र द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया, सांय को महाआरती के पश्चात रोजाना भैयाजी का प्रवचन व धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम होता था, सुः परी काला ने रत्नत्रय का व्रत धारण किया व साहिल झांझरी ने अनन्त व्रत धारण किया। क्षमावणी पर्व में सभी एक दुसरे के घर जाकर क्षमा याचना की। **संकलन : संजय कुमार जैन बड़जात्या धुलियान मुर्शिदाबाद पश्चिम बंगाल**

ज्ञान बल हमारी साधना को मजबूती प्रदान करता है : युवाचार्य महेंद्र ऋषि

एएमकेएम में पुच्छिस्सुणं संपुट की नौवीं गाथा का हुआ जाप

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नेई । ज्ञान बल हमारी साधना को मजबूती प्रदान करता है। गुरुवार को एएमकेएम जैन मेमोरियल सेंटर में पुच्छिस्सुणं संपुट१ की नौवीं गाथा के जाप के प्रश्चात श्रमणसंघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे भीतर मौजूद सकारात्मक दृष्टिकोण हमारे कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस गाथा में परमात्मा की स्तुति की गई है, जिसके भाव हमारे जीवन में उत्कृष्ट परिणाम लाते हैं। उन्होंने बताया कि श्रद्धा और आस्था के साथ परमात्मा की स्तुति करने से हमारे भावों में शुद्धता आती है, और यह शुद्धता हमें मानसिक और आत्मिक शक्ति प्रदान करती है। युवाचार्यश्री ने कहा कि परमात्मा महावीर सिर्फ बहुवीर्य नहीं थे, बल्कि परिपूर्ण सामर्थ्य से संपन्न थे। यदि किसी व्यक्ति का मनोबल मजबूत है, तो वह चट्टान की तरह अडिग रहता है, चाहे कितनी भी कठिन परिस्थितियाँ क्यों न हों। प्रभु की स्तुति हमें प्रेरणा देती है कि हमें भी जीवन की चुनौतियों के सामने चट्टान की तरह मजबूत रहना चाहिए। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों के साहस और दृढ़ता का उदाहरण देते हुए कहा कि हमारे सेनानियों ने तमाम कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन वे कभी विचलित नहीं हुए। इसी प्रकार, भगवान महावीर ने जीवन की कठिनाइयों को पूरी मजबूती से सहन किया, और इसी कारण वे महावीर कहलाए। युवाचार्य ने उपस्थित श्रद्धालुओं से आग्रह किया कि हम महावीर के अनुयायी हैं, और हमें भी साहस और धैर्य बनाए रखना चाहिए। जीवन में आने वाली विभिन्न परिस्थितियों में धैर्य और दृढ़ता ही हमारे सबसे बड़े सहायक होते हैं।

पारस विहार, मुहाना मंडी चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में वासुपूज्य भगवान का निर्वाण लाडू चढ़ाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

महातपस्वी महर्षि आचार्य श्री 108 कुशाग्र नंदीजी गुरुदेव के आशीर्वाद से दसलक्षण के पावन पर्व पर सकल जैन समाज मोहनपुरा, मुहाना एवं आसपास की समस्त कालोनी के साधर्मी बंधुओं की उपस्थिति में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

अध्यक्ष पवन गोदीका ने बताया कि अनंत चतुर्दशी के पावन पर्व प शान्तिधारा करने का एवं निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य सुभाष,अनिल गोदीका,नवरतन सेठी पीपलावाले, सुदेश गोदीका, राधा निकुंज,सुभाष गदिया, किशनगढ़ वाले. परिवार को मिला। एवं उपाध्यक्ष धमेंद्र गौदीका ने बताया कि अनंत चतुदर्शी के दिन चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की माल पहनने का सोभाग्य सत्य नारायण जी कैश्यावाला वाले एवं पड़वा को शान्तिनाथ भगवान की माल पहनने के सोभाग्य अमिताभ जी भारिल्ल, शुभम निकुंज वाले को मिला सकल दिगंबर जैन समाज के साधर्मी बंधु विरेन्द्र के. सेठी, दिनेश जी ईशरदावाले, रतन जी, योगेन्द्र जी- संघी, नवीन जी काला, अजय जी, महेंद्र कुमार पाटनी, नरेंद्र कुमार जी नैनवा वाले, नरेश जी अजमेरा, मनोज जी बाकलीवाल, सुरेशजी बाकलीवाल, रमेश जी, मुहाना, प्रतीक गोदीका, राजेश गोदीका,पदम शाह, राधाएच निकुंज,पुष्पेन्द्र जी खेतड़ी वाले, महेन्द्र कुमार जी सोगणी, प्रेम चंद जी पांड्या, आयुष जी पाटनी, दर्शन जी लुहाडिया, पुष्पेन्द्र जी पाड़या गुड़गाँव वाले, श्रैयांस जी पाटनी, सुभाष जी पाटनी, सन्मति जी बडजात्या, लालसोट वाले, राजेन्द्र कुमार जी गोधा, उमेश जी पाटोदी, विकास जी सोगाणी, रमेश उनियारा वाले, कमल जी, ये ट टीराजेश जी, हिमांशु जी पाटनी, चंद्रकांता पाटनी, अजय जी बडजात्या,अरबाना वाले, प्रेम चंदजी कासलीवाल, ईश्वर जी,मुहाना मंडी, अश्विन कुमार जी, जवाहर नगर, बसंत जी कोटा वाले, सत्येंद्र जी वैद्य, सुशील बडजात्या, अशोक पोल्याका, मुकेश जी, अंगुरी देवी त्रिवेणी नगर, आयुष जी पाटनी, अरुण जी रेवड़ी वाले, तारों की कुट, टोंक रोड।

इंग्लैंड में ब्र. जय निशान्त जी द्वारा अभूतपूर्व प्रभावना

ललितपुर. शाबाश इंडिया

लंदन हैरो श्री शांतिनाथ जिनालय में पर्यूषण पर्व के अवसर पर प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ के निर्देशक व अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद के महामंत्री ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत भैया जी द्वारा पर्युषण पर्व की बेला में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना की गई, जिसमें सभी श्रावक श्राविकाओं ने अभिषेक, शांति धारा, पूजा एवं दशलक्षण विधान के साथ उपवास, एकाशन, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण एवं ध्यान के माध्यम से पर्युषण पर्व में संयम पूर्वक धर्माचरण किया। **अभूतपूर्व प्रभावना:** प्रचारमंत्री डॉ सुनील जैन संचय ने बताया कि इंग्लैंड के प्रसिद्ध लाइका रेडियो एवं टीवी चैनल के माध्यम से साक्षात्कार करते हुए जयनिशांत भैया जी ने वहां के संचालक श्री रवि शर्मा एवं श्रीमती अलका जैन के माध्यम से संपूर्ण इंग्लैंड में प्रसारित होने वाले कार्यक्रम में दशलक्षण पर्व के बारे में बताते हुए विश्व मैत्री, सद्भावना, वात्सल्य के पर्व के रूप में तथा मानवीय विकृति क्रोध, मान,अहंकार, ईर्ष्या,परस्पर विद्वेष आदि को दूर करते हुए संयम साधना करके अपने मन को शुद्ध करना बताया। अपने शरीर, वाणी एवं मन से होने वाली हिंसा को कम करते हुए

अपने चित्त को, परिणामों को शांत रखना, विपरीत परिस्थिति में भी हम अपने आप को स्थिर रखते हुए सद्भावना बना कर रखें। **जैनधर्म आत्मधर्म:** उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में सभी भाषाओं, धर्म, परंपराओं, संस्कारों एवं संस्कृतियों का बहुमान किया जाता है। इसमें अन्य धर्म जहां शारीरिक सुविधाओं एवं संपन्नता की बात करते हैं ,जैन दर्शन शरीर से हटकर आत्मा के उन्नयन की विधि को स्वीकार करता है। प्रत्येक प्राणी अपने आप को विशुद्ध करते हुए परमात्मा बन सकता है । **पर्युषण महापर्व:** जैन दर्शन में दश लक्षण पर्व के साथ विशेष पर्व सोलह कारण, पुष्पांजलि, सुगंध दशमी, अनंत चतुर्दशी, रत्नत्रय, क्षमा वाणी का समावेश होता है। जिसके माध्यम से साधक संयम साधना व्रत ,उपवास करते हुएअपने द्वारा किए हुए अपराधों की क्षमा याचना करके सभी के प्रति सद्भावना, प्रेम, विश्व मैत्री, परस्परोपग्रहो जीवानाम्, अहिंसा परमो धर्म को जीवन में उतारने का पुरुषार्थ करता है। **प्रभावना सौजन्य:** इस परिचर्चा में श्री योगेंद्र जी का निर्देशन तथा राजेश जी के सान्निध्य एवं सौजन्य से यह प्रभावना लंदन के साथ संपूर्ण इंग्लैंड में की गई। **शुभकामनाएं:** अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् के महामंत्री एवं प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ के निर्देशक ब्र.जय निशांत भैया जी को भारत के सभी विद्वानों की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं, उन्होंने भारतीय संस्कृति के साथ-साथ जैन धर्म की प्रभावना का कार्य विश्व स्तर पर संपादित किया है। **सौजन्य:** श्री शांतिनाथ जिनालय छतरपुर मध्यप्रदेश भारत के निवासी श्री राजेश कुमार जी एवं श्रीमती मीता जैन ने अपने गृह प्रांगण में निर्मित कराकर यह पावन पुनीत कार्य किया है जिसकी वेदी प्रतिष्ठा विगत अप्रैल में भैया जी के निर्देशन में ही संपन्न हुई थी।

चित्रकूट जैन मंदिर में दस लक्षण पर्व श्रद्धा व उल्लास के साथ संपन्न

त्यागीवृतियों का हुआ सम्मान, बग्गी से निकाली शोभायात्रा

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन धर्म के पावन पर्व पर्युष्ण का चित्रकूट कॉलोनी साँगानेर जैन मंदिर में श्रद्धा के समापन हुआ। जैन मंदिर में श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से पूजा अर्चना की एवं पूजा विधान का समापन हुआ। समाज के मंत्री अनिल जैन काशीपुरा ने बताया कि सायंकाल भगवान के पंचामृत से अभिषेक किये गये एवं भगवान की महा आरती की गई। अध्यक्ष केवल चंद गंगवाल ने बताया कि समारोह में दस दिन का उपवास करने श्रीमती अंजू बोहरा एवं बबिता सौगानी का तिलक माल्यार्पण कर दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मान किया गया। इस अवसर तीन दिन का तैला करने पर सम्यक जैन व अन्य लोगो का सम्मान किया गया। मंदिर की वार्षिक माल लेने का सौभाग्य अनिल जैन नितिन जैन बनेठा परिवार को प्राप्त हुआ वही जयपुर श्री मूल चंद जी श्रीमती शान्ति देवी जी ,प्रियंका-अखिलेश (परिवारजन पंवालिया वाले दिकालोनी वालो को अन्नत चतुर्थ दशी के अवसर पर श्री जी की माल पहनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

रथयात्रा महोत्सव : ताजगंज जैन समाज ने निकाली श्रीजी की रथयात्रा,भगवान का किया अभिषेक

आगरा. शाबाश इंडिया

दशलक्षण महापर्व के समापन पर सकल जैन समाज ताजगंज के तत्वावधान में बुधवार को श्रीजी की रथयात्रा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने दोपहर 2:00 बजे श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर से रथयात्रा का शुभारंभ हुआ। रथ में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा को बैठकर श्रद्धालु कसेरट बाजार,कटरा जागीदास,चौक कागजियान,घीआई मंडी,गुड़हाई मंडी,दलिहाई,नंदा बाजार,तांगा स्टैंड,चौक थाना होती हुई से श्री पारसनाथ दिगंबर जैन पंचायती मंदिर के पांडाल में पहुंची रथयात्रा में बड़ी संख्या में ताजगंज जैन समाज के महिला,पुरुष,बच्चों के अलावा अन्य समाज के लोग भी शामिल थे। वहीं रथ यात्रा का जगह- जगह लोगों ने पुष्प वर्षा करते हुए स्वागत किया था। रथयात्रा के बाद श्रद्धालुओं ने मंदिर पहुंचकर भगवान की पूजा-अर्चना करते हुए अभिषेक किया। इस दौरान समाज के लोगों ने स्नेह मिलन भोज किया इस रथयात्रा की व्यवस्था ताजगंज युवा मंडल द्वारा संभाली गईइस अवसर पर मंदिर अध्यक्ष संजय जैन,संजयबाबू जैन, विजय जैन,योगेश जैन,पारस जैन, मधुर जैन,विश्व जैन,विशाल जैन, उत्सव जैन,मीडिया प्रभारी शुभम जैन,मीरा जैन,रितु जैन,सपना जैन, अनुराधा जैन समस्त ताजगंज के अलावा विभिन्न स्थानों की जैन समाज के लोग भी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। **रिपोर्ट : शुभम जैन**

विज्ञातीर्थ क्षेत्र पर वार्षिक कलशाभिषेक का भव्य आयोजन गुरु मां विज्ञाश्री माताजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी राजस्थान में चातुर्मास रत प. पू. भारत गौरव गणिनी गुरुमाँ विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में वार्षिक कलशाभिषेक का आयोजन बड़े ही भव्यता के साथ सानंद संपन्न हुआ। प्रतिक जैन सेठी ने बताया की इस अवसर पर विशेष शांतिधारा करने का सौभाग्य कमल सेठी मुम्बई सपरिवार ने प्राप्त किया। तत्पश्चात भगवान के चरणों की फूलमाल पहनने का सौभाग्य दिनेश झिलाई वालों ने प्राप्त किया। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष सन्मति चंवरिया ने बताया कि - इस अवसर पर विज्ञातीर्थ क्षेत्र के संरक्षक, परम संरक्षक एवं सदस्यगण उपस्थित हुए थे। सभी ने भक्ति भावों के साथ आराधना करने का सौभाग्य प्राप्त किया। पूज्य माताजी ने श्रद्धालुओं को संबोधन देते हुए कहा कि - त्रिकाल वंदना के रूप में किया जाने वाला यह कलशाभिषेक अपने जीवन में सुख- समृद्धि को देने वाला है। प्रभु के नाम की माला सभी अज्ञान, कष्ट को दूर कर देती है। माताजी ने कहा - छह माह तक अगर किसी व्यक्ति से बैर बना रहे तो नरक आयु बंध होता है। अतः जिससे वैर है उससे क्षमा मांगकर अपना दिल साफ करो। अभिषेक के पश्चात व्रत उपवास करने वाले तपस्वियों का सम्मान कर उनके तप की आराधना की गई। सभी श्रावकगणों ने आपस में क्षमा मांगकर क्षमावाणी पर्व मनाया। प्रतिक जैन सेठी ने बताया की शाम 7 बजे सभी श्रद्धालुओं ने अतिशयकारी श्री शांतिनाथ भगवान की भक्तिमय आरती सम्पन्न करायी।

युवा गौरव यश वैद ने सादगी से मनाया जन्मदिन दिवस

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान जैन सभा के महामंत्री आदरणीय श्री मनीष वैद जी के सुपुत्र यश जैन ने जन्मदिन के अवसर पर प्रतापनगर सेक्टर 8 में चातुर्मासरत उपाध्याय उर्जयन्त सागर जी महाराज का आशीर्वाद लिया इस अवसर पर समिति अध्यक्ष कमलेश जैन बावड़ी, महामंत्री महेंद्र पचाला,संयुक्त मंत्री पारस जैन बिची, महेश सेठी, पिंटू जैन,बाबू लाल जैन ईटूडां, युवा मंडल अध्यक्ष त्रिलोक चंद जैन, पुरण गंगवाल, अनमोल सेठी, रितिक जैन, नितेश मित्तल सहित बड़ी संख्या में समाज बंधु उपस्थित रहे। वहीं श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर 8 के समिति व युवा साथियों ने यश वैद को साफा, माला व दुपट्टा पहनाकर शुभकामनाएं प्रेषित की।

झुमरीतिलैया में दस लक्षण पर्व के समापन पर क्षमावाणी पर्व मनाया

झुमरीतिलैया। ''क्षमावाणी पर्व'' के साथ जैन धर्म का 10 लक्षण पर्यूषण महापर्व संपन्न हुआ। आज के ही दिन पूरे भारतवर्ष में जैन संप्रदाय के लोग पर्युषण के अंतिम दिन क्षमावाणी का पर्व मनाते हैं और एक दूसरे से गले लग कर अपने द्वारा की गई गलतियों की माफी मांगते हैं। आज जैन मंदिर में पूरे समाज के महिला पुरुष बच्चे एकत्रित हुए और बड़े ही हर्षोल्लास और उत्साह पूर्वक यह पर्व मनाया। समाज के सह मंत्री राज छाबड़ा कोषाध्यक्ष सुरेंद्र काला मंदिर निर्माण कमेटी के संयोजक सुरेश झाझंरी ने समाज की गतिविधियों को लोगों के बीच रखा एवं समाज में सहयोग प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। जय कुमार गंगवाल कमल सेठी ललित सेठी आशा गंगवाल नीलम सेठी सुनील सेठी पार्षद पिंकी जैन आदि ने सभी भक्तजनों और समाज के लोगों को क्षमावाणी पर्व की शुभकामनाएं दी। पूरे समाज से क्षमा याचना की, बुंदेलखंड कुंडलपुर से आई ब्रह्मचारी गुनमाला दीदी एवं चंदा दीदी में ने इस महान अवसर पर अपनी अमृतवाणी में भक्तजनों को कहा कि क्षमा वीरो का आभूषण है, क्षमा वीरों की शोभा है, मजबूत लोग ही क्षमा प्रदान करते हैं आज पूरे विश्व को क्षमा धर्म अपनाने की आवश्यकता है। क्षमा धर्म के पालन से पूरे विश्व में शांति कायम की जा सकती है, मनुष्य गलतियों का पुतला है गलती होना स्वाभाविक है परंतु गलती होने पर क्षमा मांग लेना ही सर्वश्रेष्ठ कार्य है, व्यक्ति को कभी भी क्रोध से नहीं जीता सकता है। क्षमा के द्वारा ही दुश्मन के मन को परिवर्तित किया जा सकता है, आज छोटी सी छोटी गलती पर भाई भाई का दुश्मन हो जाता है लोग जीवन पर्यंत एक दूसरे का मुंह नहीं देखना चाहते हैं। परंतु क्षमा के द्वारा परिवार को टूटने से बचाया जा सकता है पूरे विश्व को जैन धर्म का क्षमावाणी पर्व को विश्व मैत्री दिवस के रूप में अंगीकार करना चाहिए तभी आपस में प्रेम वात्सल्य और शांति का माहौल कायम किया जा सकता है। आज प्रातः दस लक्षण व्रतधारी प्रसम सेठी अक्षय गंगवाल नमन सेठी सदर अस्पताल में कार्यरत डॉक्टर चेलना सेठी एकांत विनायका ऋषभ काला अंकित ठोलिया तनीषा छाबड़ा ममता सेठी और रत्नत्रय धारी व्रतियों का स्वागत अभिनंदन प्रतीक चिन्ह सम्मान पत्र देकर जैन समाज के पदाधिकारियों ने किया। महिला समाज ने सभी व्रतधारियों का पारना करवाया। संध्या में भगवान की शांति धारा और विश्व शांति मत्रों से युक्त लॉन्ग की माला और आरती करने का सौभाग्य अनिल मनोज कमल पिंकी कासलीवाल परिवार को मिला। रक्षा कासलीवाल को चांदी की माला समाज के पदाधिकारी ने पहनाया समाज के लोगों ने उन्हें उनके घर चांडक परिसर तक बैंड बाजे के साथ घर तक पहुंचाया। प्रातः सभी व्रतधारियों के व्रत की अनुमोदना के लिए बैंड बाजे के द्वारा उनके घर पहुंचाया गया। यह सभी जानकारी जैन समाज के मीडिया प्रभारी नवीन जैन राजकुमार अजमेरा ने दी।

विशाल भव्य रथ यात्रा के साथ विमान महोत्सव का आयोजन किया गया

बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए परिवार ध्यान दें

संस्कृतिक कार्यक्रम की दी गई विमान महोत्सव में भव्य प्रस्तुति

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

जैन धर्मके सबसे बड़े आयोजन भगवान जिनेन्द्र देव के वार्षिकोत्सव के रूप भव्य रजत रथ यात्रा के साथ श्री विमान महोत्सव का आयोजन परम पूज्य संतशिरोमणी श्री विद्यासागर महाराज के परम शिष्य मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज के आशीर्वाद से प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भइया बाल ब्रह्मचारी पुष्पा दीदी अर्चना दीदी राजुल दीदी सुषमा दीदी के सान्निध्य में किया गया। जहां सर्व प्रथम गंज मन्दिर में कलशाभिषेक के साथ शान्ति धारा की गई जिसका सौभाग्य जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा अशोक जैन को मिला। इसके बाद ध्वजारोहण जैन युवा वर्ग के दिव्य घोष के साथ समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद कोषाध्यक्ष सुनील अखाई मंत्री विजय धुर्रा संयोजक उमेश सिघई सहित अन्य प्रमुख जनो की उपस्थिति में किया गया ।

हुआ धर्म सभा का आयोजन

इसके बाद सुभाष गंज से श्री फल के साथ कमेटी गांव मन्दिर पहुंची श्री फल भेंट कर प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भइया के मंत्रोच्चार के साथ रथ यात्रा प्रारम्भ हुई जिसमें सारथी बनकर विनोद कुमार राजू मेडिकल वहीं श्री जी को लेकर कमल कुमार पवन कुमार भोपाली परिवार को सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह रथ यात्रा पुराने बाजार गांधी पार्क भगवान महावीर मार्ग रेस्ट हाउस रशीला चौक आचार्य श्री विद्यासागर द्वार होते हुए सुभाष गंज मैदान में आकर धर्म सभा में बदल गई जहां शैलेन्द्र श्रागर के संचालक में सभा हुई इस अवसर पर

भव्य कलशाभिषेक के साथ शान्तिधारा की गई जिसका सौभाग्य श्रेयांस जैन घैला निर्मल मिर्ची मुनेश विजयपुरा प्रमिला पवन कुमार वीर धुर्रा अंशुल अनिमेष इंदार प्रदीप जैन रानी पिपरई राजेश कासल नीरज पढ़ा सहित अन्य भक्तों को मिला।

शहर के प्रमुख मार्गों से निकाली विशाल भव्य रजत रथयात्रा

इसके पहले भव्य विशाल रजत रथ यात्रा गाँव मन्दिर प्ररभ्य की गई जिसमें श्री दि जैन युवा वर्ग के दिव्य घोष के साथ दि जैन पचंयात कमेटी व समाज के प्रमुख जनो गाँव मन्दिर पहुँचकर भगवान के श्री चरणों में श्री फल भेंट कर रथयात्रा प्ररभ्य कराई रथयात्रा में आगे आगे जैन युवा वर्ग का दिव्य घोष इसके वाल मंडल घोष इसके बाद पाठशाला के वच्चों सिर पर साफे वाधकर नृत्य करते हुए चल रहें थे उसके बाद महिला महा समिति इसके बाद गर्वा नृत्य के साथ जैन महिला युवा वर्ग इसके बाद सुधा सागर महिला संगठन विद्यासागर महिला मंडल विमर्श जाग्रति महिला मंडल महिला परिषद सहित अन्य महिला मंडलों के सदस्य इसके बाद महिला सगंठन व पाठशाला की वहने विभिन्न संस्कृतियों कार्य क्रम की प्रको लेकर चल रहे थे इसके विमान जी के आगे नाचते गाते भक्त जन उसके बाद नव निर्मित रजत रथ को युवा खींच रहे थे यह रथयात्रा सुभाष गंज मैदान में आकर धर्म सभा में वदल गये ।जहाँ धर्म सभा को संबोधित करते बाल ब्रह्मचारी पुष्पा दीदी ने कहाँ कि भगवान की रथयात्रा में जो उत्साह देखने को मिला वहुत अच्छा है क्या वच्चे युवा वर्ग वुजुर्ग महिला परूष सभी का आनंद धर्म के लिए थे ये हमेशा वना रहना चाहिए रथयात्रा जिला पुलिस अधीक्षक श्री विनीत कुमार ए एस पी गजेन्द्र सिंह कंवर एस डी ओ पुलिस शर्मा जी पूर्व विधायक जजपाल सिंह जज्जी विधायक हरिबावू राय नगर पालिका अध्यक्ष नीरज मनोरिया अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद कोषाध्यक्ष सुनील अखाई मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा थूवोनजी कमेटी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू महामंत्री विपिन सिंघई सहित अन्य प्रमुख जन उपस्थित थे। रथयात्रा दस दिवसीय व्रतों का विदाई समारोह है कोध्र चडाल के समान है महा भारत का युद्ध जीतने के बाद अर्जुन से श्री कृष्णजी ने कहा कि रथ से नीचे उतर आओ अर्जुन को गुस्सा तो वहुत आया लेकिन दवा कर रह गया अर्जुन के उतरते ही रथ धू धू कर रथ जल गया तव अर्जुन को समझ में आया कि श्री कृष्ण जी क्या है।

32 दिन के उपवास सकुशल संपन्न होने पर निकला भव्य जुलूस

शकुंतला बिंदायका ने किए 32 दिन के उपवास, महावीर जैन व रिकी जैन ने किए तीन दिन का उपवास

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन महिला महासमिति राजस्थान आंचल की अध्यक्ष एवं संघनी फॉरएवर ग्रुप के अध्यक्ष जनकपुरी महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती शकुंतला जी बिंदायका के 32 दिन के 16 कारण व्रत के उपलक्ष में तथा उनके पति महावीर जैन व उनकी बहू रिकी जैन के तीन दिन के उपवास के तहत जनकपुरी जैन मंदिर में बहुत भव्य जुलूस निकाला गया। जुलूस में जनकपुरी जैन समाज के अध्यक्ष पदम बिलाला के साथ साथ सम्पूर्ण मंदिर कमेटी वी जैन समाज जनकपुरी , सुरेंद्र पांड्या, अनिल जैन आईपीएस, महावीर बाकलीवाल, प्रिया बड़जात्या वैशाली नगर, राजेश बड़जात्या, सहित अनेक गण मान्य लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर आयोजित भव्य जुलूस में उपस्थित सभी ने शकुंतला जी बिंदायका के तप की अनुमोदना की।

अतिशय क्षेत्र जग्गा की बावड़ी में अंनत चतुर्दशी पर हुई पूजन कलशाभिषेक

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र जग्गा की बावड़ी 10 लक्षण महापर्व में अंनत चतुर्दशी के शुभ अवसर पर श्री श्री 1008 वासु पूज्य भगवान मूल नायक के मोक्ष कल्याण दिवस पर निर्वाण लाडू प्रातः 10:00 बजे चढ़ाया गया। जिसमें 16 परिवारों के द्वारा शांति धारा की गई। जिसमें मुख्य रूप से सुनील कुमार बक्शी मानद मंत्री वह कमेटी के अन्य सदस्य आदर्श नगर जयपुर के युगांतर ललित अजमेरा ,महावीर कसेरा, सुरेश सोगानी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। इस पर्व को सभी जैन धर्मावलंबियों ने श्रद्धापूर्वक मनाया।

क्षमा पर्व मनाया व एक दूसरे से क्षमा याचना की गई

धामनोद. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज धामनोद ने आज क्षमावनी पर जैन मंदिर मे क्षमावनी पूजन कर भगवान की प्रतिमा पर कलश किये व आरती कर मन्त्रोंचार के साथ ध्वजा शिखर पर लगाई। समाज अध्यक्ष महेश जैन व सचिव दीपक प्रधान ने बताया की मुनीसेवा समिति के तत्वावधान मे समाज जनो का सामूहिक क्षमा पर्व का आयोजन किया गया। जिसमे अतिथि भिलाई से पधारे पंडित दिनेश जैन सोमा जैन शकुंतला जैन व अलका जैन डॉ प्रकाश कियावत थे अध्यक्षता जैन समाज अध्यक्ष महेश जैन की व इस दौराम अतिथियों ने भगवान की फोटो का अनावरण कर दीप प्रज्ज्वलित किया। इस दौरान दस दिन तक महापर्व दस लक्षण महापर्व पर धर्म रूपी गंगा बहाने आये पंडित दिनेश जैन का स्वागत रमेशचंद जैन राजा जैन नरेंद्र जैन व राकेश जैन ने किया। अभिन्दन पत्र समाज अध्यक्ष महेश जैन व कार्यकारिणी सदस्यों ने दिया। दस उपवास की साधना करने वाली प्रणीती जैन का सम्मान व अभिन्दन पत्र समाज कमेटी व पंडित जी ने किया। 3 उपवास व 5 उपवास की साधना करने वालों का स्वागत किया व जिन्होंने मंदिर व्यवस्था व अन्य कार्यों मे सहयोग करने वालों का व कार्यकारणी के सहयोग व मुनीसेवा समिति के श्रेष्ठ कार्यों का भी प्रसंशा की व मंदिर मे कार्य करने वाले सेवादारों का स्वागत कर वस्त्र दिए गए इस कार्य मे मुनीसेवा समिति का सहयोग अनुकरणीय रहा आभार अध्यक्ष महेश जैन ने माना।

जानिए क्यों बजाते हैं तालियां...

ताली है दुनिया का सर्वोत्तम एवं सरल सहज योग

ताली बजाने से हृदय रोग, मधुमेह, अस्थमा और गठिया जैसी बीमारियों में राहत मिलती है। आंखों की रोशनी अच्छी होती है और बाल झड़ने की समस्या से भी राहत मिल सकती है। ताली बजाने से तनाव और चिंता दूर करने में मदद मिलती है। घर में, मंदिर में, देवालय में या कहीं भी भजन-कीर्तन या आरती होती है, सभी लोग मिलकर खूब तालियां बजाते हैं। हम से अधिकांश लोग बिना कुछ जाने-समझे ही तालियां बजाया करते हैं, क्योंकि हम अपने पूर्वजों को ऐसा करते देखते आ रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि भजन-कीर्तन व आरती करते समय तालियां क्यों बजाई जाती हैं? हम आपको आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दोनों तरीकों से बताएंगे कि लोग ऐसा क्यों करते हैं। ताली दुनिया का सर्वोत्तम एवं सरल सहज योग है और यदि प्रतिदिन यदि नियमित रूप से ताली बजाई जाये तो कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। प्रतिदिन अगर नियमित रूप से 2 मिनट भी तालियां बजाई जाएं तो फिर किसी हठयोग या आसनों की जरूरत नहीं रहेगी।

आध्यात्मिक मान्यता के अनुसार

जिस प्रकार व्यक्ति अपने बगल में कोई वस्तु छिपा ले और यदि दोनों हाथ ऊपर करे तो वह वस्तु नीचे गिर जायेगी। ठीक उसी प्रकार जब हम दोनों हाथ ऊपर उठकर ताली बजाते हैं तो जन्मों से इकट्ठा पाप जो हमने स्वयं अपने बगल में दबा रखे हैं, नीचे गिर जाते हैं अर्थात नष्ट हो जाते हैं। कहा तो यहां तक जाता है कि जब हम संकीर्तन (कीर्तन के समय हाथ ऊपर उठा कर ताली बजाना) में काफी शक्ति होती है। संकीर्तन से हमारे हाथों की रेखाएं तक बदल जाती हैं।

हिंदुओं के पवित्र सर्वमान्य ग्रंथ रामचरित मानस में भी तुलसीदार ने इसका बड़े ही सुंदर तरीके से जिक्र किया है। उन्होंने लिखा है-

राम कथा सुंदर कर तारी।
संशय विहग उड़ानवनहारी ।।

इधर ताली बजाने का महत्व संगीत रत्नाकर ग्रंथ में भी बताया गया है। इस ग्रंथ में ताली को भगवान शिव और पार्वती के मिलन का रूप बताया गया है

वैज्ञानिक आधार

एक्यूप्रेशर सिद्धांत के अनुसार, मनुष्य के हाथों में पूरे शरीर के अंग व प्रत्यंग के दबाव बिंदु होते हैं, जिनको दबाने पर संबंधित अंग तक खून व ऑक्सीजन का प्रवाह पहुंचने लगता है और धीरे-धीरे वह रोग ठीक होने लगता है। यह जानकार आप सभी को बेहद खुशी होगी कि इन सभी दबाव बिंदुओं को दबाने का सबसे प्रभावी व सरल सरल तरीका होता है ताली बजाना।

ताली के प्रकार व लाभ

1. तेज आवाज वाली ताली

ताली में बाएं हाथ की हथेली पर दाएं हाथ की चारों अंगुलियों को एक साथ तेज दबाव के साथ इस प्रकार मारा जाता है कि दबाव पूरा हो और आवाज अच्छी आये। इस प्रकार की ताली से बाएं हथेली के फेफड़े, लीवर, पित्ताशय, गुर्दे, छोटी आंत व बड़ी आंत तथा दाएं हाथ की अंगुली के साइनस के दबाव बिंदु दबते हैं। इससे इन अंगों तक खून का प्रवाह तीव्र होने लगता है। इस तरह की ताली को तब तक बजाना चाहिए, जब तक हथेली लाल न हो जाए। इस प्रकार की ताली बजाने से कब्ज, एसिडिटी, मूत्र, संक्रमण, खून की कमी व श्वांस लेने में तकलीफ जैसे रोगों में लाभ पहुंचता है।

2. थप्पी ताली

ताली में दोनों हाथों के अंगूठे, अंगूठे से कनिष्का, कनिष्का से तर्जनी, तर्जनी से सभी अंगुलियां अपने समानांतर दूसरे हाथ की अंगुलियों पर पड़ती हों, हथेली-हथेली पर पड़ती हो। इस प्रकार की ताली की आवाज बहुत तेज व काफी दूर तक जाती है। यह ताली कान, आंख, कंधे, मस्तिष्क, मेरूदंड के सभी बिंदुओं पर दबाव डालती है। एक्यूप्रेशर चिकित्सकों की राय में इस ताली को भी तब तक बजाना चाहिए, जब तक कि हथेली लाल न हो जाये। इस ताली से फोल्डर एंड सोल्जर, डिप्रेशन, अनिद्रा, स्लिप डिस्क, स्पोगोलाइसिस और आंखों की कमजोरी जैसी समस्याओं में काफी लाभ पहुंचता है।

3. ग्रिप ताली

इस प्रकार की ताली में सिर्फ हथेली को हथेली पर ही इस प्रकार मारा जाता है कि वह क्रॉस का रूप धारण कर ले। यह ताली उत्तेजना बढ़ाने का विशेष कार्य करती है। इस ताली से अन्य अंगों के दबाव बिंदु सक्रिय हो उठते हैं और यह ताली सम्पूर्ण शरीर को सक्रिय करने में मदद करती है। यदि इस ताली को तेज व देर तक बजाया जाये तो शरीर में पसीना आने लगता है, जिससे शरीर के विषैले तत्व पसीने से बाहर आकर त्वचा को स्वस्थ रखते हैं। इस ताली बजाने से न सिर्फ रोगों से रक्षा होती है, बल्कि कई रोगों का इलाज भी हो जाता है। हाथों से नियमित रूप से ताली बजाकर कई रोग दूर किए जा सकते हैं एवं स्वास्थ्य की समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। एक्यूप्रेशर के प्रभाव एवं दुष्प्रभावों को, जिन्हें हम आज नहीं समझ पाते हैं। उन्हें हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि हजारों-लाखों लाख वर्ष पहले ही जान गए थे। जब हर किसी को बारी-बारी शारीरिक संरचना की इतनी गूढ़ बातें समझानी संभव नहीं थीं, इसलिए हमारे पूर्वजों ने ताली को एक परंपरा का रूप दे दिया। ताकि मानव समुदाय आने वाली कई सदियों तक उनकी इस अनमोल खोज का लाभ उठाते रहें।

पदम जैन बिलाला
जनकपुरी, जयपुर

शरीर को ठीक करने का देशी जुगाड़ क्या है?

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर। 9828011871

अगर हम शरीर को ही स्वस्थ रहना माने तो शरीर तो त्वचा, हड्डी, मांस, मज्जा का ही बना है। उसको तो चाहे देशी दवा दो या विदेशी उसे तो ठीक होना ही है लेकिन अगर खुद को शरीर न मान कर शरीरी यानी में शरीर नही हूँ माने तो मांसाहार नुकसानदेय है। किसी भी आद्यात्मिक व्यक्ति से पूछेंगे तो वह यही कहेगा कि शाकाहारी बनें। पर क्यों? क्योंकि ,जैसे ही आपकी आद्यात्मिक यात्रा प्रारंभ होती है आप देह की वासना से मुक्त होने लगते है। देह को विषय भोग से हटा कर सात्विक भोजन की तरफ मुड़ जाते है। फिर आपको छोटी मोटी बीमारी तंग नही करती। हाँ जो पूर्वजों से डीएनए के द्वारा बीमारी आई है उसको तो आपको इलाज करना ही पड़ेगा। चूंकि आध्यात्मिक बनते ही आपको देह से मोह ही नहीं तो उस देह की चिकित्सा के समय क्या शरीर खा रहा है ये आपको महसूस नहीं होगा। अगर लोग सात्विक भोजन करेंगे तो चित्त विषय भोग में कम लगेगा। फिर बीमार होने की संभावना भी कम हो जाएगी और हमें इन इंग्लिश दवाओं को लेना ही नही पड़ेगा। जब शरीर से भोगों के प्रति वासना नही रहेगी तो शरीर ऊजार्वान होने लगता है। मोदी जी की ऊर्जा देखिए। यह ब्रह्मचर्य की ही ताकत है। में खुद भी जब नाई के पास जाता हूँ तो वह कहता है बाउजी आपके पुट्ठे काफी सॉलिड है। इस उम्र में भी क्या खाते हो तो में कहता हूं कि मूंग और चने की दाल। अभी मैंने एक अनुभव किया। मैं बीपी की गोली 15 साल से लेता हूँ सरकारी नोकरी में टेंशन तो रहती ही है । जो सरकारी नौकरी मन से करेगा तो अधिक कार्य भी मिलेगा। फिर उसकी टेंशन भी। पिछले सर्दियों में पराठे अधिक खाने से कोलोस्ट्रोल बढ़ गया था। डॉक्टर ने खून को पतला करने की और कोलोस्ट्रोल को कम करने की दवा दी। उससे मुझे आराम मिला। फिर मेने सुवह सुवह चूंकि अभी गर्मी है मेने एक छोटी लोकी का जूस पीना प्रारंभ कर दिया। 15 दिन बाद मेने टेस्ट कराया तो टोटल कोलोस्ट्रोल 80 ही रह गया। डॉक्टर ने कोलोस्ट्रोल की गोली बंद कर दी। यानी लोकी में इतनी ताकत है कि वह गर्मी कम करती है विटामिन बढ़ाती है। खून को पतला करती है। कोलोस्ट्रोल को कम करती है जिससे बीपी भी कम हो जाता है। यानी हमारी सात्विक भोजन से बीमारी पास ही नही आती। समस्या यह है कि हमने विदेशी आहार मांस, मदिरा, तामसी प्रकृति अपना ली। उससे शरीर मे शुगर, बीपी, कोलोस्ट्रोल की बीमारी पनप रही है। फिर इनके लिये हम अंग्रेजी दवा लेने लगते है फिर इनके आदी हो जाते है। हमारी बीमारियों की जड़ हमारा अम्लीय भोजन है। क्षारीय भोजन हम कम करते है इससे ही बीमारी बढ़ती है। कृपया ध्यान रहे कि लौकी की तासीर ठण्डी होती है यह क्षारीय पदार्थ है। तथा यह तेजी से शुगर और बीपी कम करती है अतः इसका अधिक मात्रा में सेवन न करें तथा सर्दियों में सेवन न करें। लोकी का सूप हृदय के ब्लॉकेज को भी कम करता है।